International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 07-09

लोकभाषा अंगिका के प्रमुख शब्दों की उत्पत्ति एवं यात्रा

पुलकित कुमार मंडल
शोधार्थी, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय महाजनपदों में 'अंग' भी एक प्रमुख महाजनपद था। इस महाजनपद का विस्तार वर्तमान बिहार के सहरसा, कटिहार, पूर्णिया, खगड़िया, भागलपुर, मुंगेर, जमुई, बाँका एवं झारखण्ड राज्य के दुमका, देवघर एवं गोड्डा तक था। इन क्षेत्रों की सभ्यता–संस्कृति एवं भाषा आज भी लगभग समान ही है।

डॉ0 गायत्री देवी ने अपनी पुस्तक 'अंगिका लोकगीत' में अंगिका भाषा के क्षेत्र–विस्तार के बारे में उल्लेख करते हुए लिखा है कि– ''पार्टीजर का मत है कि इसके अन्तर्गत वर्तमान सहरसा आदि प्रमंडल बनने के पूर्व के आधुनिक मुंगेर और भागलपुर जिले सम्मिलित थे और इसका विस्तार कोसी नदी तक था। इन्होंने पूर्णिया के पश्चिमी हिस्से को भी अंग में सम्मिलित किया है। गंगा से उत्तर वाला इसका अंग 'अंगुप्तराप' कहलाता था, जहाँ बुद्ध भ्रमण के लिए आये थे।''–[1]

पौराणिक काल में 'अंग' अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए डॉ0 गायत्री देवी ने अपने ग्रंथ 'अंगिका लोकगीत' में लिखा है कि–

''अंग की राजधानी चम्पा थी। 'मत्स्य पुराण' के अनुसार इसका प्राचीन नाम मालिनी था। यह नगर गंगा–तट पर स्थित था। आधुनिक भागलपुर नगर चम्पा की जगह पर है। वर्तमान भागलपुर में चम्पानगर एक मुहल्ला भी है। बुद्ध के समय तक चम्पा भारत के छः प्रमुख नगरों में था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा–विवरण एवं बौद्ध ग्रंथों से यह सूचित होता है कि चम्पा वाणिज्य का प्रधान केन्द्र था।''–[2]

अंग महाजनपद अर्थात अंग देश को वास्तविक पहचान महाभारतकालीन दानवीर कर्ण से मिली। यहाँ की भाषा (बोली) पर मैथिली का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रख्यात अंग्रेज विद्वान जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने इस क्षेत्र की भाषा को 'पूर्वी मैथिली' कहा था। इसे सुसंस्कृत नाम 'अंगिका महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने दिया।

डॉ0 गायत्री देवी ने जॉर्ज ग्रियर्सन के मत के सम्बंध में लिखा है कि– ''ग्रियर्सन द्वारा निर्दिष्ट पूर्वी मैथिली और छिकाछिकी बोली के क्षेत्र में आ जाते हैं। इस क्षेत्र के कुछ हिस्सों में जहाँ ब्राह्मणों का निवास है, मैथिली भी बोली जाती है, पर व्यापक रुप से यह अंगिका क्षेत्र ही है।''–[3]

अंगिका का उल्लेख प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में होने का वर्णन करते हुए डॉ0 गायत्री देवी ने लिखा है कि–'' पुराने संस्कृत ग्रंथों में एक प्राच्या भाषा का उल्लेख मिलता है और उस प्राच्या भाषा की कई शाखाएँ मानी गई है, जिनमें पांचाली, वैदेही, वांगी आदि आशाओं के साथ आंगी की भी चर्चा होती है। यह आंगी ही वर्त्तमान अंगिका का ही पूर्व रूप मानी जा सकती है।''–[4]

राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंश के आदिकवि सरहपाद की, जो चौरासी सिद्धों में एक थें, अंगक्षेत्रवासी होने की संभावना व्यक्त की है।

इस भाषा में प्रचलित कुछ वैसे प्रमुख शब्द जिसका अर्थ समझने में दूसरे क्षेत्र के लोगों को कठिनाई होती है, उस पर विचार कर व्याख्यायित करना मेरा ध्येय है।

डॉ0 नीलू कुमारी ने अपने आलेख 'अंग जनपद एवं अंगिका भाषा की प्राचीनता' में कुछ संज्ञा–पदों पर विचार किया है, जिसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:–

''अंगिका में उपर्युक्त शब्द क्रमशः बेंग (मेढ़क) बरद (बैल), गईया (गाय), नोन (नमक), टाल, टांगा/टांगी, आगिन (आग) दीया (दीपक), माटी, खूंटी (खूँटा) आदि के रूप में प्रचलित है। मागधी अपभ्रंश में 'र' के स्थान पर प्रायः 'ल' रहा करता है, जैसे 'वलद' जो अंगिका में बरद/बरोंद (बैल) है। अपभ्रंश में 'गाय' के अर्थ में 'गावी शब्द का प्रयोग भी हुआ है, जिसका निश्चयात्मक रूप 'गविआ' है जैसा कि अंगिका में 'गईया' या 'गैया' शब्द प्रचलित हैं'' ।–[5]

सर्वप्रथम मैं अंगिका के कालावाचक शब्दों यथा–आय, काल, परसू, अखनी, जखनी, तखनी, कखनी पर क्रमशः विचार कर रहा हूँ:–

क. आयः– इस शब्द का प्रयोग वर्त्तमान दिन के लिए किया जाता है। यह संस्कृत के 'अद्य' और तद्भव 'आय' शब्द का रूपांतरण है।

यथा– अद्य झअय्यझअय झआय
अद्य झअज्जझअज झआज

ख. कालः– यह शब्द संस्कृत में भी समय–सचक है वर्त्तमान में यही शब्द 'कल' रूप में बीते और आने वाले समय के लिए प्रयुक्त होता है, परंतु अंगिका में संस्कृत के समय–सूचक शब्द 'काल' ज्यों का त्यों ही वीते एवं आने वाले समय के लिए प्रयुक्त होता है।

ग. परसूः– इस शब्द का प्रयोग हिन्दी में परसो के रूप में होता है। वास्तव में 'परसू या 'परसो' शब्द का व्यवहार बीते हुए दो दिन या आने वाले दूसरे दिन को सूचित करने के लिए होता है। 'परसू' या 'परसो' शब्द संस्कृत के 'परे श्व' (कल के एक दिन परे) का रूपांतरित है। अंगिका व्यवहृत 'परसू' शब्द संस्कृत के अधिक निकट है। यथा–परेश्वझपरश्वझपरशूवझपरशूझपरसू

घ. अखनीः– इस शब्द का प्रयोग अंगिका में वर्त्तमान दिन के तत्काल के लिए होता है। यह संस्कृत के ' अद्यक्षणे' का रूपांतरण है।

यथा– अद्यक्षणेझअयक्खनेझअयक्खनीझअखनी

ड. जखनीः– इस समय–सूचक शब्द का व्यवहार अंगिका में बीते हुए या आने वाले विशेष समय को बताने में होता है। 'जखनी'

शब्द का अर्थ होता है जिस समय अर्थात जब। यह संस्कृत के 'यदाक्षणे का रूपांतरण है।

यथा– यदाक्षणेझजदाक्षणेझजदाखणेझजदक्खनेझजखनी

- विशेष– 'य' अक्षर का उच्चारण मुख–सुख के कारण 'ज' हो जाता है और 'क्ष' 'ख'।

च. तखनीः– इस समय–सूचक शब्द का व्यवहार अंगिका में बीते हुए विशेष रूप से परिणामदायक सक्रिय घटना के समय या आने वाले परिणामदायक समय के लिए होता है। 'तखनी' का अर्थ– 'तब' होता है। यह संस्कृत के ' तत्क्षणे' या 'तदक्षणे' का रूपांतरण है।

यथा– तत्क्षणेझतत्क्खनेझतक्खनेझतक्खनेझतक्खनीझतखनी

छ. कखनीः– इस शब्द का व्यवहार अंगिका में प्रश्नवाची समय के लिए होता है। यह संस्कृत के 'कदाक्षणे' का रूपांतरण है।

यथा– कदाक्षणेझकदक्षणेझकदक्खनेझकक्खनझकखनेझकखनी।

सहायक एवं मूल क्रियाएँ

हिन्दी में मुख्य रुप से जिन सहायक क्रियाओं का व्यवहार होता है, वे हैं– हैं, है, था, थे, थी, गा, गे, गी, रहा, रही, रहे, चुका, चुकी, चुके, या, ये, यी। अंगिका में मुख्य रूप से– 'है, हैं' के लिए 'छिअ, छिय, छियै, छै' होता है। यह संस्कृत के 'असि' का रुपांतरण है, जिसका अर्थ 'है' होता है।

यथा– असि झ अछि झ छिअ झ छिय झ छियै झ छि झ छै।
'विशेष– 'स' का उच्चारण 'छ' हो जाता है।

अंगिका में 'छियै' और 'छै' के बदले 'छिकै' का भी व्यवहार मुख्य रुप से होता है।

तात्कालिक वर्तमान काल की क्रिया के लिए मुख्य क्रिया के साथ 'रहल छै' का व्यवहार होता है। अंगिका पर बांग्ला प्रभाव होने के कारण 'रहल' के 'ल' अक्षर में निहित 'अ' स्वर का उच्चारण 'ऑ' हो जाता है और 'रहल' के बदले उच्चारण एवं लेखन में भी 'रहलॉ' का व्यवहार करते हैं।

जैसे– 'खाय रहलॉ छै', 'जाय रहलॉ छै', 'पढ़ि रहलॉ छै' इत्यादि।

सामान्य भूतकाल की क्रिया के लिए मुख्य क्रिया में 'लै' और 'कै' का योग होता है।

यथा– गेलै, बोललै, हँसलै, देखलकै, खैलकै, खेललै, पढ़लकै, गिरलै, उठलै इत्यादि।

आसन्न भूत की क्रिया के लिए इस प्रकार से व्यवहार किया जाता है, यथाः– पढ़ने छै, खैने छै, गैलॉ छै, अइलॉ छै, बोललॉ छै, लेनै छै इत्यादि।

पूर्ण भूत क्रिया के लिए मुख्य क्रिया के साथ 'चुकलै' या 'चुकलकै' शब्द का योग होता है।

यथा– जाय चुकलै, खाय चुकलै, पढ़ि चुकलै, बोलि चुकलै, समझि चुकलै या समझि चुकलकै इत्यादि।

भविष्यत काल की क्रिया के लिए मुख्य क्रिया के साथ 'बै', 'तै', 'वाला छै' का व्यवहार होता है।

यथा– जैबे (जाऊँगा), खैबै (खाऊँगा), जैतै (जाएगा/जाएँगे), खाय वाला छैं (खाने वाला है।)।

अब अंगिका में व्यवहृत निम्नलिखित शब्दों के मूल और उसकी परिवर्तन–यात्रा पर विचार करना अपेक्षित है,

यथाः–
लोर (आँसू), लूर (ज्ञान), झोर/झॉर (वर्षा–जल), कानना (रोना), ठाँ (स्थान), तींतना (भींगना), चिकरना (चिल्लाना),बथान (घर से बाहर की जगह), जुवाना (परिपक्व होना), लवका/लपका (नया), नूनू (बच्चा), तापतॉ (गर्म), खारछो (नमकीन है), नोन (नमक), ठट्ठा (हँसी/मजाक), बेगना (फेंकना), नेसना (लौ जलाना/शुरू करना) खियाना (घींसना)।

- लोर (आँसू)
  नीरझलीरझलोर
- लूर (ज्ञान)
  नूर झलूर
  विशेष– 'न' का उच्चारण मुख–सुख के कारण 'ल' होता है।
- झोर/झॉर (वर्षा–जल)
  जल झजॉलझझॉलझझॉरझझोर
  विशेष– 'ज' का परिवर्तन 'झ' में एव 'ल' का 'र' में हो जाता है।
- कानना (रोना)
  क्रंदन झक्रन्दनझक्रन्ननझकन्ननाझकानना
- ठाँ (स्थान)
  स्थान झथानझठानझठाँ
- तींतना (भींगना)
  सिक्त झसिक्तनझतिक्तनझतिक्तना झतींतना
- चिकरना (चिल्लाना)
  चीत्कारना झचीत्कालनाझचित्कलनाझचिकलना झचिकरना
- बथान (घर से बाहर की जगह)
  वाहिंस्थानझबहिस्थानझबहस्थानझबस्थान झबथान
- जुवाना (परिपक्व होना)
  युवाझयुवानाझजुवाना
- लवका/लपका (नया)
  नवझलवझलवकाझलपका
- नूनू (बच्चा)
  न्यूनझनिऊनझनिऊनूझनूनू
- ताप्तॉ (गर्म)
  तप्तझताप्तझताप्ताझताप्तॉ
- खारछो (नमकीन है)
  क्षारझखारझखाराझखारछैझखारछझखारछो
- नोन (नमक)
  लवणझनवणझनवनझनउनझनोन
- ठट्ठा (हँसी/मजाक)
  अश्टहासझअट्टहासझअट्ठहासझअट्ठहाझट्ठहाझठट्ठा
- बेंगना (फेंकना)
  वेग (गति) देनाझवेग देनाझवेगनाझबेगनाझ

प्रेक्षणझप्रेक्खणझप्रेक्खनाझफेक्खनाझफेंकना

- नेसना (लौ जलाना/शुरू करना)
  न्यासझन्यासनझनिआसनाझनेआसनाझनेसना
- खियाना (घींसना)/नष्ट होना
  क्षयझखयझक्षयणझखयनझखयनाझखियाना
  घर्षणझघर्षणाझघसनाझघिसानाझघींसना

इस प्रकार देखा कि अंगिका बोली/भाषा में प्रयुक्त शब्द संस्कृत के शब्दो से व्युत्पन्न एवं सम्बद्ध हैं। अंगिका को हमारे देश के अन्य राज्यों यहाँ तक कि बिहार के ही कुछ जिलों में समझने में कठिनाई प्रकट की जाती है। यदि अन्य भाषा–भाषी थोड़ी सजगता रखते हुए समझने का प्रयास करे तो अंगिका भी सरल एवं ग्राह्य हो जाएगी।

संदर्भ

1. अंगिका लोकगीत, डॉ0 गायत्री देवी मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2004 ई0, पृष्ठ सं0 12।
2. अंगिका लोकगीत, डॉ0 गायत्री देवी मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2004 ई0, पृष्ठ सं0 12–13।
3. अंगिका लोकगीत, डॉ0 गायत्री देवी मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2004 ई0, पृष्ठ सं0 13।
4. अंगिका लोकगीत, डॉ0 गायत्री देवी मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2004 ई0, पृष्ठ सं0 15–16।
5. 'अंग जनपद एवं अंगिका भाषा की प्राचीनता' 17–18 डॉ0 नीलू कुमारी नागरी प्रचारिणी पत्रिका त्रैमासिक, जनवरी–मार्च 2004 ई0 में प्रकाशित 2004 ई0